नं० ५५०८ – घ

दशावतार

(काव्यम्)

पत्राणि १०

संपूर्णम्

सर्षविनार

नं. १०९८

सं० २०१८-के

८
१

ॐ श्रीगणेशाय नमः॥ अथ दसश्रो
नार लिख्यते॥ ॐ दसश्रोतार शेक
राचार्यजी उचरे॥ एकसमे ब्रह्माजीइं
इकारमंडल लैकर अमनानकोग
ये॥ सतपुरी सेवो सुरदाने उतपतिभ
ई॥ तब ब्रह्माजी शिवपुरीकोगई

स्वामीजीकौनकारजशिवपुरीकौ
प्राइहो॥सिंभजीवेदशास्त्रग्रहरह
रलैगयो॥स्वामीजीहमतजोगीनगार
पावारीविद्यापाइ॥वेदशास्त्रकी॰
जगतितजानै॥तबब्रह्माजीशिव॥
पुरीतजि॥स्वर्गलोककोगई॥स्वा

८
२

मीजीतमहीकारना॥तमहीदेवत
हीजानो॥वेदशास्त्रकाबेद॥चौबेम
मेत्र॥चारवेद॥षट्शास्त्र॥अष्टादस
पुराण॥नवव्याकेरण॥मनवार॥स
ताईनिरुक्ततर॥पंद्रातिथो॥वाणा॰
शा॥नवग्रह॥चैपदेहथ्या॥तर्पण॥गे

गागायत्री॥सावित्री॥सरस्वती॥ब्रह्म
कर्म॥प्रभावती॥रंकणी॥शंकणी॥स
हदेव॥सूरज॥चंद्रमा॥हरचरणवि
त्तलाई॥वपैयमिमापछैजाई॥प्रथ
मश्रीनारायणजी॥मछरूपहोइउ
तरो॥मछकोमातासिंघावती॥पि

ताऊवैतिषी॥ गुहमानयाता॥ क्ववी
उस्राराष्ठुशिपहनेदलेत॥ संत्वाह्व
रदांनवलीयोड्यरंत॥ १

ॐ श्रीगणेशायनमः॥ ॐ ह्रूंजेश्री
नारायणजी कूर्मरूप होउ नरे॥ कू
र्मकी माता पद्मावती॥ पिता कौल
व ऋषी गुरु सहजानंद॥ क्षेत्री मान
सरोवर॥ पटनेदलंत॥ मधुकैटभ

द
४

दानेलीयेोऽपरांत ॥ २ ॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ तीजे श्री
नारायणजी वराह रूप उतरे ॥ वरा
ह की माता लीलावती ॥ पिता दा
लवरिषी ॥ गुरु विक्रण ॥ क्षेत्री उश्रा
णपुरी ॥ पटने दलंत ॥ हिरणादा

८
५

सदानोलीइउपरांत ॥ १

ॐ श्रीगणेशाय नमः॥ ॐ चौथे श्री
नारायणजी प्रहलादके कारज॥
को नरसिंघ रूप होइ आये॥ नरसिं
घकी माता चंद्रावती॥ पिता हरमे
डलरिषी॥ गुरु ब्रह्म रतेज छेत्रीमह

द ललानक्षुरीपटनेद्लेत ॥ हरमा
८ विसदानोलीइउपरेत ॥ ४

6

ॐश्रीगणेशायनमः॥पंजमीश्री
नारायणजीवामनरूपहोअवरे॥
वामनकीमातालिंगवती॥पिता
केसवरिषी॥गुरुत्रिलोचन॥छत्र पवी
त्रीपटनेदलंतकलवलेप्जे॥

द ८

लीयोउपरंत ॥ ५ ॥ ॥ ॥

ॐ श्रीगणेशायनमः॥ अथश्रीनाराय
णजीपरसरामरूपहोइअवतरे॥ प
रसरामकीमातारेनकी॥ पिताज
मदगनैरिषि॥ गुरुब्रमासिम्भुनी
क्षेत्रीजुआरघरीपठनेदलेत॥ श्रा

द
८

जैतदानोसहस्त्रबाहोलीयोउप
रंत॥निरंजननिराकारश्रीजेपोती
स्वरूप॥८॥ ॥ ॥ ॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः॥ ॐ ससमीश्री
नारायणजी श्रीरामचंद्ररूपहोउ
नरे॥ रामचंद्रकी माता कौसल्या॥
पिता जसरथ॥ गुरु वसिष्ठजी॥ क्षे
त्र ब्रह्मऋषि श्रापुरी॥ पर पटनीदले

८५

त ॥ दससिरदानवलीयोउदरंत
तेरीजोतिअनंत ॥ तेरीलीलाअनं-
त ॥ तेरीसोभाअनंत ॥ तेरीमहिमा
अनंत ॥ ७ ॥ ॥ ॥ ॥

ॐ श्रीगणेशायनमः॥ ॐ ब्रह्मश्री
नारायणजीकस्वरूपहोउनरे॥ श्री
कृष्णजीकीमातादेवकी॥ पिताव
सुदेव॥ गुरुउर्वासा॥ क्षेत्रमथुरा
पुरी॥ प्रगटनेदलेन॥ कंसको

१३३

द सीदेवोलीयोउदरंत ८ ॥

१